HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-IV (History of Modern Asia(China & Japan))

Unit-I (1911 CHINESE REVOLUTION)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 24

1911 ई. की चीनी क्रांति

चीन में मंचू वंश की स्थापना 17 वीं शताब्दी में हुई थी और 1911 ई. तक चीन पर इस राजवंश का शासन चलता रहा। इस राज्य वंश के शासन काल के पहले चीन एक समृद्ध देश था। परंतु मंचू वंश के उत्तर कालीन शासन में राजनीतिक दृष्टि से चीन की अवस्था बेहद खराब हो गई। फलत: 19 वीं शताब्दी में चीन विदेशी साम्राज्यवाद का बुरी तरह शिकार हो गया। इन विदेशी साम्राज्यवाद के खिलाफ 1911 ईस्वी में डॉ सनयात सेन के नेतृत्व में मंचू राजवंश के विरुद्ध एक भयंकर विद्रोह हुआ। जिसे 1911 ई की चीनी क्रांति कहते हैं। इस क्रांति के फ़लस्वरूप चीन से मंचू राजवंश समाप्त हो गया।

1911 ई. के चीनी क्रांति के निम्नलिखित कारण थे:–

✓ मंचू राजवंश की दुर्बलता:–

19 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में चीन की शासन व्यवस्था पूर्णता विकृत हो गई थी। पिकिंग की केंद्रीय सरकार दुर्बल थी और चीनी साम्राज्य के विविध प्रांतों पर नाम मात्र के लिए भी उसका नियंत्रण नहीं रह गया था। चीन की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी जिसके कारण चीन जापान युद्ध तथा बॉक्सर विद्रोह के समय उसे विदेशी राज्यों के सम्मुख झुकना पड़ा। जिससे चीनी जनता भड़क गई और ऐसी दुर्बल शासन को देश से खत्म करने के लिए 1911 में क्रांति कर दी।

✓ सुधारों की असफलता:–

बॉक्सर विद्रोह के बाद चीन के सुधारवादियो ने मंचू शासन की महारानी पर कुछ सुधार योजनाओं को कार्यवान्वित करने के लिए दबाव डाला जिसके चलते महारानी ने कुछ सुधार योजना बनाकर लागू किया। सेना के संगठन में सुधार किया गया। परीक्षा पद्धति में सुधार किया गया लेकिन सरकार की ओर से सुधार कार्य काफी धीमी गति से किए जा रहे थे। जिसके कारण वहां की जनता बौखला गई और सुधारवादी लोग चीन में संसदीय शासन और वैध राजसत्ता की मांग करने लगे। लेकिन सरकार ने मांग को ठुकरा दिया। इस हालत में क्रांति का होना अवश्यंभावी हो गया।

✓ पाश्चात्य जगत से संपर्क:–

Dr. Guddy Kumari (A. N.D College)

पाश्चात्य जगत से संपर्क चीनी क्रांति का एक प्रमुख कारण था। 20 वीं शताब्दी में चीन का संपर्क यूरोपीय देशों के साथ हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से बहुत से चीनी विद्यार्थी यूरोप, अमेरिका और जापान गए। वहा उन्हें क्रांतिकारी साहित्य के अध्ययन का अवसर मिला। जब यह युवक स्वदेश लौटे तो अपने देश की तुलना यूरोपीय देशों के साथ करने लगे और यूरोपीय देशों के समान चीन को उन्नत बनाने का स्वप्न देखने लगे। उन्हें मंचू राजवंश के निरंकुश शासन से बड़ी घृणा हो गई और उसका अंत करने के लिए वे व्यग्र हो उठे।

✓ आर्थिक दुर्दशा:–

चीन की क्रांति का एक प्रमुख कारण आर्थिक दुर्दशा भी था। चीन की आबादी बड़ी तेजी से बढ़ रही थी किंतु सरकार उसके भोजन के इंतजाम करने में असमर्थ थी। देश में जो खाद्य सामग्री उत्पन्न होती थी। वह जनता के लिए पर्याप्त नहीं थी। चीन के लोग लगातार प्राकृतिक प्रकोप के भी शिकार होते रहे। देश में बाढ़ और अकाल की प्रचुरता थी। जिसके कारण खेती को बहुत अधिक नुकसान पहुंचता था। 1911 में चीन के अनेक नदियों में भयंकर बाढ़ आई इससे खेती तो नष्ट हुई ही थी साथ ही सहस्त्र गांव भी बह गए। लाखों व्यक्ति बेघर हो गए और उनकी आजीविका का कोई साधन नहीं रहा। ऐसी परिस्थिति में क्रांति के विचारों का आना स्वभाविक था।

✓ चीन के मजदूरों का प्रभाव:–

देश की आर्थिक स्थिति से परेशान होकर चीन के मजदूर आजिविका की तलाश में विदेशों में जाकर बसने लगे। सबसे पहले वह संयुक्त राज्य अमेरिका गए। कुछ दिनों तक अमेरिकी सरकार ने इसका कोई विरोध नहीं किया। लेकिन जब बहुत बड़ी संख्या में चीनी लोग अमेरिका पहुंचने लगे तो सरकार ने कानून बनाकर उनका आगमन रोक दिया। जब अमेरिका का दरवाजा चीनियों के लिए बंद हो गया तो वे पास पड़ोस के अन्य देश मलाया फिलिपिंस हवाई दीप इत्यादि में जाकर बसने लगे। इस प्रकार चीनी जनता का एक बहुत बड़ा भाग विदेशों के संपर्क में आया। जिससे चीन के निम्न वर्ग में क्रांति की भावना प्रवेश कर गई।

✓ डॉ सनयात सेन का योगदान:–

1911 ई. की क्रांति का एक प्रमुख कारण सनयात सेन का योगदान भी था। चीन के क्रांतिकारियों को संगठित करने में डॉक्टर सन्यात सेन का महत्वपूर्ण हाथ था। वे चीन की दुर्दशा का एकमात्र कारण मंचू राजवंश को ही मानते थे और उन्होंने चीन की व्यवस्था में सुधार लाने के लिए 'तुंग मेंग हुई' नामक राजनीतिक दल का संगठन किया। इस दल का आदर्श चीन में मंचू शासन समाप्त करना, पश्चात देशों के शोषण से चीन को मुक्त करना,देश की भूमि का राष्ट्रीकरण करना था। इस पार्टी ने अपने आदर्शों को जनता तक पहुंचाने के लिए मीन पाओ नामक पत्र निकाला। इसके द्वारा चीन में बड़ी तीव्र गति से क्रांतिकारी भावनाओं का विकास हुआ और विद्रोही भावना जाग उठी।

✓ तात्कालिक कारण:– 1911 ई. में जो क्रांति हुई, उसके एक नहीं बल्कि कई तात्कालिक कारण भी थे जो निम्नलिखित हैं–

1. स्वदेशी रेलमार्ग योजना की अस्वीकृति:–

इस समय चीन में रेलवे लाइनों का निर्माण बड़ी तेजी से हो रहा था। पीकिंग कि सरकार से अनुमति प्राप्त कर कई विदेशी फॉर्म चीन में रेलवे लाइनों का निर्माण करा रही थी। जबकि चीन के कई प्रांतपति चाहते थे कि उनके सुबों में उन्हें ही रेलवे लाइन के निर्माण का अधिकार मिले। लेकिन पिकिंग की सरकार ऐसा करना नहीं चाहती थी। वह स्वयं रेलवे लाइनों का

Dr. Guddy Kumari (M.N.D College)

निर्माण करना चाहती थी। लेकिन इसके लिए उसके पास धन का अभाव था। चीन की सरकार विदेशों से कर्ज लेकर इस काम को पूरा करना चाहती थी। विदेशी कर्ज लेने से चीन की केंद्रीय सरकार पर विदेशियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। इस कारण प्रांतों के शासक बड़े चिंतित हो रहे थे और इस बात पर जोर दे रहे थे कि उनके अपने प्रदेशों में रेलवे निर्माण का भार उन्हीं को सुपुर्द कर दिया जाए। इस विषय पर केंद्रीय और प्रांतीय सरकार में मतभेद बहुत बढ़ गया और इसी समय जब एक विदेशी कंपनी को एक रेलवे लाइन बनाने का अधिकार दे दिया गया तो क्रांति की लहर चारों ओर फैल गई। अनेक स्थानों पर मंचू शासन के खिलाफ विद्रोह शुरू हो गया।

2. हाको की घटना और क्रांति का विस्फोट:–

जेचुआन के आंदोलन का प्रारंभिक स्वरूप क्रांतिकारी नहीं था। इसमें केवल रेलवे निर्माण की पूंजी के साझेदारों का हाथ था। लेकिन जिस समय यह आंदोलन जोरों पर था। उसी समय 10 अक्टूबर 1911 को हाको की रूसी बस्ती में एक घर में एक बम फट गया। यह घर क्रांतिकारियों का अड्डा था। जहां बम बनाने का काम होता था। बम फटने से जोर शोर मच गया और रूसी अधिकारियों ने बहुत से विद्रोहियों को पकड़कर चीनी सरकार के वायसराय के हवाले कर दिया। उनके हाथ एक सूची भी पड़ गई, जिससे उनकी योजना का भंडाफोड़ हो गया। पुलिस ने कुछ सैनिक अफसरों पर भी संदेह कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इस पर सरकारी अफसरों के दमन चक्र से बचने के लिए फौज में जो क्रांतिकारी थे, उन्होंने वायसराय के दफ्तर को घेर लिया और उसमें आग लगा दी। 12 अक्टूबर को हांको पर अधिकार कर क्रांतिकारियों ने कामचलाऊ सरकार काम कर लिया। इसी के साथ चीन की क्रांति शुरू हो गई।

चीन में इस समय स्थिति इतनी नाजुक थी कि विदेशियों ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया। इसी बीच देश में अव्यवस्था और विद्रोह का दमन कर देश में शांति बनाए रखने के लिए 1 नवंबर 1911 ई को केंद्रीय विधान सभा ने युआन सीह काई को प्रधानमंत्री का पद दे दिया। इसी बीच 24 दिसंबर 1911 को जब सनयात सेन अमेरिका से चीन आए तो क्रांतिकारियों ने उसे अपने सरकार का अध्यक्ष चुन लिया। अंत में सोच–विचार कर सनयात सेन तथा युआन सीह काई ने आपस में समझौता कर चीन में मंचू राजवंश का अंत कर गणराज्य की स्थापना कर दिए और क्रांतिकारियों ने सर्वसम्मति से युआन सी काई को चीनी गणराज्य के राष्ट्रपति निर्वाचित कर लिया और इसी के साथ चीनी क्रांति का अध्याय समाप्त हो गया।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि उनकी 1911 ईस्वी के चीनी क्रांति मंचू राजवंश की निर्बलता और मूर्खता का फल था। यह एक ऐसी घटना थी जिसने मंचू राजवंश का अंत कर चीन में गणराज्य की स्थापना कर दी और सदा के लिए चीन में राजसत्ता का अंत कर दिया।

! धन्यवाद !

Dr. Suddy Kumar (A.N.D College)